Volume: 1 Issue: 1 Pages: 11-13

कृषि एवं कृषक एक एतिहासिक विवेचन

[*1]राजेश कुमार

[*1]सहायक प्राध्यापक (हिन्दी), मध्यांचल प्रोफेशनल युनिवर्सिटी, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (SJIF): 3.477
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 18/Aug/2022
Accepted: 20/Sep/2022

***Corresponding Author**
राजेश कुमार
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी), मध्यांचल प्रोफेशनल युनिवर्सिटी, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

भारतीय जीवन पुरुषार्थ की अवधारणा (धर्म, अर्थ, कर्म एवं मोक्ष) पर आधारित है। इन पुरुषार्थों में भौतिक सन्तुष्टि का साधन होने के कारण अर्थ सबसे महत्वपूर्ण माना गया है क्योंकि चारों वर्ण एवं आश्रम के लोग अपने कर्म तथा धर्म के लिए अर्थ पर ही निर्भर रहते हैं। इसी अर्थ के उपार्जन का एक साधन कृषि है।

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य प्राचीन भारत के गुप्तकालीन कृषि और कृषक जीवन का अध्ययन करना है कि किस तरह से मानव अपने विकास के क्रम में यायावरी जीवन को छोड़कर स्थायी जीवन की ओर अग्रसर हुए और कृषक जीवन को बेहतर बनाने का प्रयास किया।

मुख्य शब्द: अमरकोष, महाव्रीही, गुप्तकाल, शस्य, वाराहमिहिर।

प्रस्तावना

भारतीय जीवन पुरुषार्थ की अवधारणा (धर्म, अर्थ, कर्म एवं मोक्ष) पर आधारित है। इन पुरुषार्थों में भौतिक सन्तुष्टि का साधन होने के कारण अर्थ सबसे महत्वपूर्ण माना गया है क्योंकि चारों वर्ण एवं आश्रम के लोग अपने कर्म तथा धर्म के लिए अर्थ पर ही निर्भर रहते हैं। इसी अर्थ के उपार्जन का एक साधन कृषि है। कृषि कार्य वह कार्य था जिसे मनुष्य ने अपने अनुभवों के विस्तार के साथ सीखा और जब मानव अपने विकास के क्रम में यायावरी जीवन को छोड़कर स्थायी जीवन की ओर अग्रसर हुआ तो उसने सर्वप्रथम कृषि व्यवसाय को अपनाया। यद्यपि भारतीय समाज में प्राचीन काल से ही जीवकोपार्जन के कई साधन प्रचलित थे किन्तु अस्तित्व रक्षक एवं क्षुधापूर्ति का एक प्रमुख उपादान होने के कारण कृषि की महत्ता सभी कालों में बनी रही।

गुप्तकालीन कृषि एवं कृषक जीवन का अवलोकन साहित्यिक– वराहमिहिर (बृहत्संहिता), अमर सिंह (अमर कोश) आदि के ग्रन्थों एवं नारद बृहस्पति एवं कात्यायन आदि की स्मृतियों में आये कृषि के विस्तृत विवरणों से गुप्तकालीन अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्व भली भांति प्रमाणित है। इन ग्रन्थों से ऋतुज्ञान, खेती के लिए भूमि तैयार किए जाने की विधि, कृषि के उपकरण, खेतों की जुताई, बुआई, रोपण के शुभ मुहुर्त तथा विधियों, फसलों के रोगों तथा उनके उपचार, खेत की स्थिति विभिन्न धान्यों एवं अन्य पैदावारों की किस्मों आदि का पर्याप्त ज्ञान प्राप्त होता है। [1] इस काल में उत्तम फसल प्राप्त करने के लिए कृषकों को खेतों को तीन बार जोतने का सुझाव दिया गया है। अमरकोश में एक बार जोते गये खेत के लिये सित्य, कृष्ट, हल्यात, दो बार जोते गये खेत के लिये द्विसित्य, द्विहल्य, द्विगुणाकृत शम्बाकृत तथा तीन बार जोते गये खेतों के लिये त्रिसीत्य, त्रिहल्य, त्रिगुणाकृत

शब्द का प्रयोग मिलता है। [2] भूमि को अच्छी तरह जोत लेने के बाद उसमें बीज बोया जाता था। वराहमिहिर ने गुप्तकालीन दो फसलों का उल्लेख किया है–

1. **पूर्व सस्यः** जो वर्षा ऋतु के प्रारम्भ में बोई जाती थी और पतझड़ में तैयार "होती थी। इस फसल की प्रमुख पैदावार धान थी।
2. **अपर सस्यः** जो पतझड़ में बोई जाती थी और ग्रीष्म ऋतु में तैयार होती थी। इसके प्रमुख अनाज गेहूँ एवं जौ थे। इसके अलावा बसन्त में बोई जाने वाली तथा चैत्र मास में पकने वाली एक अन्य फसल का उल्लेख भी बृहत्त– संहिता में मिलता है।

गुप्तकालीन कृषित उत्पादों में गेहूँ, धान, ज्वार, ईख, बाजरा, मटर, सरसों, तिल, अलसी, अदरक, सब्जी दालें तथा मसाले प्रमुख थे। [4] कालिदास एवं वराहमिहिर के विवरणों से स्पष्ट है कि उन दिनों ईख एवं धान की पैदावार अधिक होती थी। [5] तत्कालीन ग्रन्थों में धान की विविध किस्मों का विवरण मिलता है किन्तु इनमें सबसे उत्कृष्ट प्रजाति के धान के लिये कलम, शालि, निवार, महाशकि तथा महाव्रीहि आदि शब्द प्रयुक्त हुआ है। अमरकोश में परयाय (बैरत) क्षेत्र में साठ दिन में तैयार होने वाले धान की तीन किस्मों–आशु, ब्रीहि एवं पाटल का उल्लेख मिलता है। इस काल में मसालों में इमली, पीपल, कालीमिर्च, इलायची, अदरक, हल्दी का उत्पादन होता था। कालिदास ने लिखा है कि काली मिर्च और इलायची मलय पर्वत (नीलगिरि) के पास बहुत होते थे। [6] इसके साथ दालों में उड़द, मूंग, कुलथी, चना, राजमाष, मसूर, अरहर आदि सभी उगाई जाती थी। [7] शाकों में अमरकोश में ककड़ी, पान, सुपारी, प्याज, लहसुन, काशीफल, लौकी, सभी का उल्लेख है। [8]

खेतों की फसल की समुचित व्यवस्था करना उनके स्वामियों का कर्त्तव्य था फिर भी शास्त्रकारों ने इनका नुकसान पहँचाने वालों को दण्डित करने का विधान किया है। सम्भवतः जनसंख्या के बढ़ते घनत्व के कारण कृषि योग्य भूमि अधिक उपलब्ध नहीं थी इसलिए तत्कालीन स्मृतिकारों नारद बृहस्पति ने यह व्यवस्था दी कि यदि कोई कृषक लंबे समय तक भूमि जोतने में असमर्थ है तो भूमि को दूसरे को सौंप देना चाहिए। बाद में वह दूसरे कृषक द्वारा लगायी गई लागत को अदा कर –अपनी भूमि प्राप्त कर सकता था। बंजर, परती या अनुपजाऊ भूमि को कृषि योग्य बनाने वाले किसान का भूमि कर एक निश्चित अवधि तक माफ कर राज्य उसे . प्रोत्साहन देता था। गुप्तकाल में लोहे का व्यापक प्रयोग कृषि में हुआ। इस काल में उत्तम प्रकार के लोहे के फालयुक्त हल का प्रयोग किया जाता था। अमरकोश में हल को लांगल, हल, गोदारण एवं सीर तथा हल के फाल को फल निरीश, कुटक, फाल और कृषक कहा गया है। [9] कॉसमस के अनुसार कुछ लोग लोहे के बदले गैंडा के मोटे चमड़े का फाल के रूप में प्रयोग करते थे। [10] यद्यपि उनके इस मत की पुष्टि किसी अन्य समकालीन साक्ष्य से नहीं होती। अमरकोश के अनुसार हल बैलों की सहायता से खींचे जाते थे तथा हल में चलने वाले इन बैलों को हलिक या सौटिक कहा जाता था। [11] बराहमिहिर ने शरीर के आकार–प्रकार एवं बनावट के आधार पर बैलों के शुभ लक्षण, उनके भार वहन करने तथा द्रुत गति से चलने की क्षमता का विस्तृत वर्णन किया है। [12]

गुप्तकाल में सिंचाई के लिए लोग वर्षा पर निर्भर रहते थे पुराणों एवं कालिदास के ग्रन्थों में वर्षा के निमित्त किये जाने वाले यात्रिक अनुष्ठानों का वर्णन मिलता है। इस काल में सिंचाई के मख्यतः दो प्रकार के साधन थे – प्राकृतिक एवं कृत्रिम [13] वर्षा के अतिरिक्त नदियों, झील, झरने, कुएँ तथा तलाब सिंचाई के प्रमुख प्राकृतिक साधन थे। उत्तर भारत में नदी सिंचाई के लिए एक उपयोगी साधन थी, किन्तु मध्य एवं पश्चिमी भारत के पथरीले एवं ऊँचे–नीचे भौगोलिक परिवेश के कारण नदियों से सिंचाई संभव न थी अतः सरकार एवं जनता से अनेक तालाब, झीलें, नहरें, एवं कुएँ खुदवाएं तथा बाँध बनवाए गए। नारद एवं बृहस्पति के अनुसार नवीन तड़ाग, बावड़ी कुएँ बनाने तथा इनका जीर्णोद्वार कराने वाला व्यक्ति राजा के स्वर्गिक पुण्य फलों का भाग होता है। बृहस्पति की स्मृतियों में यह व्यवस्था दी गयी है कि शिल्प श्रेणियों को सिंचाई बाँधों की देखभाल करनी चाहिए। [14]

गुप्तकालीन दामोदरपुर (द्वितीय) [15] ताम्रपत्र में सिंचाई के साधन के रूप में अरहट (पानी खींचने की रहट) तथा पानक (पानी निकास की नाली) शब्द का उल्लेख आया है। इस काल में रहट ने विकसित होकर पर्सियन व्हील का प्रारम्भिक रूप प्राप्त कर लिया था और अब इसके लिए 'घंटीयंत्र' शब्द प्रयुक्त होने लगा था। अमरकोष में इसके दो नाम बताए गए है – घंटी यंत्र एवं सलिलो दवाहन। [16] ऐसा प्रतीत होता है कि सिंचाई प्रायः एक स्थानीय जिम्मेदारी होती थी गुप्त काल में सौराष्ट्र की प्रसिद्ध झील का निर्माण राज्य सरकार ने ही सम्पन्न किया था [17] राज्य द्वारा सिंचाई योजनाओं को संरक्षण प्राप्त था। इसके विकास के लिए प्रोत्साहन देने का कार्य किया जाता था तथा इन्हें हानि पहुँचाने वाले को दण्ड दिया जाता था। स्कन्दगुप्त ने जूनागढ़ अभिलेख में गिरनार नगर के पुरपति चक्रपॉलित द्वारा विशाल धनराशि खर्च कर सुदर्शन झील के टूटे बन्ध का पुर्ननिर्माण कराया जाना कृषि सिंचाई में राजकीय हस्तमोर को सूचित करता है। वृहत्संहिता के जल सिंचन के अन्वेषण नामक एक सम्पूर्ण अध्याय में सिंचाई की व्यवस्थाओं का वर्णन है, इसमें अनावृष्टि एवं अतिवृष्टि के समय फसलों को बचाने के अनेक उपाय सुझाये गए है।

कृषक जीवन

गुप्तकाल तथा इसके अनन्तर भूमि–दान की प्रक्रिया का तत्कालीन कृषि कर्म एवं कृषक जीवन पर व्यापक प्रभाव

पड़ा। इस काल में भूमिदान की प्रथा के कारण भूमि विखण्डन की प्रक्रिया तीव्र हुई। गुप्त पूर्व स्मृतियों यथा, मनु एवं याज्ञवल्म्य में आरम्भिक उत्तराधिकार के बारे में जो कानून दिये गये हैं, उनमें भू–सम्पत्ति के बंटवारे का कोई उल्लेख नहीं है किन्तु गुप्तकालीन नारद [18] एवं बृहस्पति [19] की संहिताओं में सर्वप्रथम इसका उल्लेख मिलता है। इस प्रकार गुप्तकाल के मध्य या उसके अन्त की ओर बड़े–बड़े संयुक्त कृषक परिवार जिनके पास बड़ी–बड़ी जमीनें थीं, टूटकर छोटी–छोटी इकाईयों का रूप ग्रहण करने लगे। उत्तर भारत की उपजाऊ नदी घाटी में जनसंख्या का घनत्व बढ़ता जा रहा था इसलिए जैसे ही भूमि के बंटवारे को मान्यता मिली भूमि का विखण्डन और तेज हो गया।

इस काल में दिये गये भूमिदानों के कारण भूमिधर ब्राहमणों एवं जमींदारों के एक ऐसे वर्ग का निर्माण हुआ जिसे न केवल भू–सम्पत्ति का मलीकाना हक था बल्कि कर वसूल करने तथा कानून व्यवस्था स्थापित करने का भी अधिकार था। इसके परिणामस्वरूप जमीन पर से कृषक वर्ग के स्वामित्व/अधिकार का क्षरण हुआ और साथ ही जंगलों, चारागाहों, मछली पकड़ने के जलाशयों आदि पर सामूहिक अधिकारों में कमी हुई। भूमिधर ब्राह्मण तथा जमींदार अपनी शर्तों पर कृषकों से खेती करवाते थे तथा उनसे मनमाना कर वसूल करते थे। फाह्यान एवं इत्सिंग के विवरण से पता चलता है कि विहारों और मठों की जमीन अस्थाई पट्टे जोतते थे तथा भू–स्वामियों को मालगुजारी दिया करते थे। [20]

उपज का निश्चित भाग राज्य को नियमित कर के रूप में देने के अलावा किसानों पर विविध प्रकार के अन्य कर यथा उद्रंग, कर, हिरण्य, उपरिकर, हलिका, सिंचाई कर, क्लिप, उपक्लिप्त आदि लगाए जाते थे। इसके अतिरिक्त राजकीय सेवा और अधिकारी जब किसी क्षेत्र से गुजरते थे, सम्बद्ध गाँवों के लोगों को उन्हें न केवल विभिन्न प्रकार के कर देने पड़ते थे वरन् सैन्य उद्देश्यों के लिये उन्हें सभी तरह की बेगार भी करनी पड़ती थी। इससे गुप्तकालीन कृषकों की स्थिति में पूर्वकाल की अपेक्षा गिरावट आयी। कुछ एक अनुदान शर्तो ने ग्राम दान के समय किसानों को गाँव छोड़कर न जाने तथा दान भोगियों के आदेश का पालन करने का निर्देश दिया गया है। प्रो0 रामशरण शर्मा का मानना है कि इससे अधिकार प्राप्त दान–ग्रहीताओं मे मनमानी शुरू की जिससे कृषक वर्ग की स्थिति दासों जैसी हो गयी। [21] किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि गुप्तयुगीन शांति एवं सुव्यवस्था, विज्ञान एवं तकनीकी में अपेक्षित विकास से अधिशेष उत्पादन इतना अधिक होता था कि गुप्तकालीन कृषक सभी प्रकार की माँगों की पूर्ति करते हुए स्वयं अपना तथा समाज के अन्य अनुत्पादी. वर्ग का पालन–पोषण अच्छे से कर लेता था जिससे आर्थिक विकास की गतिमत्ता बनी रही।

सन्दर्भ सूची

1. गोयल, श्रीराम गुप्त साम्राज्य का इतिहास, पृष्ठ 406
2. अमरकोश 2.9.8–9,
3. बृहत्त संहिता 8.8–9
4. अमरकोश, 2.9.9
5. बृहत्त संहिता 8.30, 19.16
6. ओम प्रकाश, प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास, पृ0 20 (द्वितीय खण्ड)
7. ओम प्रकाश, प्राचीन भारत सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास, पृ0 20 (द्वितीय खण्ड)
8. ओम प्रकाश, प्राचीन भारत सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास, पृ0 20 (द्वितीय खण्ड)
9. अमरकोश 3.3137
10. कॉसमास 1, पृ0 358
11. अमरकोश 2.9.64
12. बृहत्संहिता, गोलक्षणाध्याय, 7–16
13. मैती, एस.के. इकनोमिक लाइफ इन नार्दर्न इण्डिया इन दि गुप्त पीरियड, पृ. 166
14. बृहस्पति स्मृति, 17.11–12
15. गुप्ता, पी.एल. प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख भाग–1 पृ. 122.123
16. अमर कोश, 2.10–27
17. शर्मा, रामशरण प्रारम्भिक भारत का आर्थिक एवं सामाजिक इतिहास पृ0 172
18. नारद 13.38
19. बृहस्पति, 26.10., 28, 53, 64
20. लेग्गे, ए रिकार्ड ऑफ बुद्विस्टिक किंगडम पं0 43
शर्मा, रामशरण प्रारम्भिक भारत का आर्थिक एवं सामाजिक इतिहास पृ0 172